SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-01| September- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

अभिषेक त्रिपाठी[1] एवं डॉ0 अच्युत कुमार यादव[2]

[1]शोध–छात्र (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज
[1]Email: abhishek.tripathi775@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत समस्या कथन के अन्तर्गत ***"आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन"*** *किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर आधारित है जिसके अन्तर्गत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है जिसमें 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण महाविद्यालयों से 40–40 विद्यार्थियों का चयन किया गया साथ ही यह भी ध्यान में रखा गया है कि 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब है एवं 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालयों से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब है एवं आईसीटी प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालय से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब नहीं है तथा विद्यार्थियों के अधिगम शैली के प्राप्तांकों को ज्ञात करने के लिए डॉ0 अनु बलहरा एवं प्रिया मित्तल द्वारा ''अधिगम शैली स्केल'' का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त निष्कर्ष – शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों जो कि आईसीटी का प्रयोग करते हैं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति आईसीटी प्रयोग न करने वाले शहरी विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि शोधार्थी द्वारा समस्या कथन के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना का सत्यापन करने के पश्चात् निष्कर्ष में पाया गया कि– आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली में अन्तर है अर्थात् आईसीटी का प्रभाव लिंग के आधार पर अधिगम शैली पर पाया गया।*

मुख्य शब्द–सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, उपयोग, छात्र–छात्राएँ, अधिगम शैली, तुलना, टी–परीक्षण

प्रस्तावना–

स्नातक स्तर के विद्यार्थी तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया गया है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) एक ऐसी योजना है जो स्नातक स्तर के महाविद्यालयों में प्रारम्भ की गई है। इसके लिए इन विद्यालयों में बाकायदा आई.सी.टी. लैब की भी स्थापना की गई है जहाँ मुख्य रूप से स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के आधुनिक उपकरणों की सहायता से शिक्षण करवाया जाता है।

रोजमर्रा की जिंदगी में आईसीटी क्या है आईसीटी का उपयोग केबलिंग (सिग्रल वितरण और प्रबंधन सहित) या लिंक सिस्टम की एकीकृत प्रणाली के माध्यम से कम्प्यूटर नेटवर्क के साथ आडियो–विजुअल और टेलीफोन नेटवर्क जैसी मीडिया प्रौद्योगिकी के अभिसरण को संदर्भित करने के लिए भी किया जाता है। हालांकि, आईसीटीकी कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है, यह देखते हुए कि आईसीटी में शामिल अवधारणाएं, तरीके और उपकरण लगभग दैनिक आधार पर लगातार विकसित हो रहे हैं।

आईसीटी के बारें में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने मत दिये जिसमें **जेम्स कानफार्ड और नील पोलोक (2003)** ने अपनी पुस्तक ''पुटिंग द यूनिवर्सिटी ऑन लाइन (2003)'' में संचार के साधनों एवं शिक्षा के आपसी सम्बन्धों को स्पष्टता देते हुए कहा कि संचार प्रौद्योगिकी यदि विश्वविद्यालय की सीमाओं को अस्थिर कर रही है तो उनका उपयोग सीमाओं के विस्तार करने के लिए भी किया जा सकता है। उन तकनीकियों का प्रयोग कर उच्च शिक्षा की पुर्नसंरचना और नये माहौल के अनुरूप विश्वविद्यालय को नये सिरे से तैयार करने की दृष्टि से ऑनलाइन एवं वर्चुअल विश्वविद्यालय उच्च के भविष्य का अत्यन्त प्रबल दर्शन बनकर उभरा है। **कुमार (2004)** ने अपने लेख में बताया है कि सूचना– संप्रेषण तकनीकी प्रकृतिवादी निषेधात्मक शिक्षा है, ये इसी के समान सभी संवेदी अंगों को संवेदनशील बनाकर सूचनाओं को प्रभावशाली ढंग से ग्रहण कर सकता है। ये वातावरण को बहुआयामी, रूचिपूर्ण और आकर्षक बनाकर व्यक्तिगत अधिगम एवं स्वअनुदेशन का वातावरण निर्मित करता है। **खान, अब्दुल कादडस (2014)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– 21वीं सदी की शुरुआत में ही मानव जाति पारंपरिक युग को छोड़कर डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंचने में सफलता मिली। इसके साथ ही मानव समाज में ऑनलाइन शिक्षा की मांग धीरे–धीरे बढ़ती जा रही है और भारत में उच्च शिक्षा की मांग आज भी आईसीटी के प्रभावी उपयोग के कारण हो रही है। इसका जीवन के सभी क्षेत्रों में तथा शिक्षा के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। इंटरनेट और कंप्यूटर उपकरणों के विकास के साथ–साथ आईसीटी के विकास के नकारात्मक मूल्यांकन की आवश्यकता होगी। ऑनलाइन शिक्षा, मुक्त विद्यालय एवं विश्वविद्यालय, दूरस्थ पाठ्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम, ई पुस्तकें आदि के माध्यम से प्रदान कर सकती है। यह अध्ययन करने का एक तरीका है जो लोगों को पूरे जीवन में कब और कहाँ जरूरत है सीखने की अनुमति देता है। **सुनीता (2018)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) की तीव्र प्रगति ने विभिन्न क्षेत्रों को काफी प्रभावित किया है और शिक्षा सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। शिक्षा में आईसीटी के एकीकरण ने पारंपरिक शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं को काफी बदल दिया है, जिससे शिक्षक केंद्रित पद्धति

से अधिक संवादात्मक, छात्र केंद्रित दृष्टिकोण में बदलाव आया है। **मंडल, संदीप (2024)** ने शोध पत्र के निष्कर्ष– भारत की प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में आईसीटी की क्षमता को रेखांकित करता है ताकि सीखने को अधिक सुलभ, आकर्षक और एक विविध छात्र आबादी के लिए प्रासंगिक बनाया जा सके। हालांकि, तकनीकी बुनियादी ढांचा तैनाती, शिक्षक प्रशिक्षण, सामग्री विकास और सभी छात्रों के लिए समान पहुंच सहित एक समग्र रणनीति की आवश्यकता है। यह अनुच्छेद भारत के प्राथमिक स्कूलों को बदलने के लिए समानता, गुणवत्ता और समावेशिता के शैक्षिक उद्देश्यों के साथ संरेखित आईसीटी एकीकरण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की वकालत करता है।

जहाँ एक तरफ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक तरफ बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है वहीं दूसरी तरफ उसका नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहा है। इसका समर्थन पूर्व अध्ययनों से होता है जिसमें **कौर, धर्म एवं हुसैन, शहादत (2018)** ने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि– निष्कर्ष निसंदेह इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। सोशल नेटवर्किंग साइट युवाओं के दैनिक जीवन को बहुत आसान बना रहा है, लेकिन इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही पक्ष देखने को मिल रहा है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि एक व्यक्ति इसका उपयोग कैसे कर रहा है।

समस्या कथन–

"आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन का उद्देश्य

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना

1. आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली पर लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   - 1.1 आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   - 1.2 आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले छात्रों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   - 1.3 आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
   - 1.4 आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

© Shiksha Samvad| Received: 03 September 2025 | Accepted: 06 September 2025 | Published: 11 September 2025

1.5 आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली पर लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श–

प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है जिसमें 10 शहरी एवं 10 ग्रामीण महाविद्यालयों से 40–40 विद्यार्थियों का चयन किया गया साथ ही यह भी ध्यान में रखा गया है कि 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब है एवं 5 शहरी एवं 5 ग्रामीण महाविद्यालयों में जहाँ आईसीटी लैब नहीं है।

उपकरण–

प्रस्तुत अध्ययन में आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालयों से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब है एवं आईसीटी प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों का चयन उस महाविद्यालय से किया गया है जिस महाविद्यालय में आईसीटी लैब नहीं है तथा विद्यार्थियों के अधिगम शैली के प्राप्तांकों को ज्ञात करने के लिए डॉ0 अनु बलहरा एवं प्रिया मित्तल द्वारा ''अधिगम शैली स्केल'' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियाँ–

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन–

$H_{01.1}$ आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 01

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों			आईसीटी का प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	500	102.49	15.14	300	91.57	12.03
$D=(M_1 \sim M_2)$	10.92					
σ_D	0.97					
t-value	11.26					
df = 798 = .05 (1.96) /.01 (2.59) = सार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 01 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का मध्यमान क्रमशः 102.49 एवं 91.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 15.14 एवं 12.

© Shiksha Samvad| Received: 03 September 2025 | Accepted: 06 September 2025 | Published: 11 September 2025

03 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 10.92 तथा मानक त्रुटि 0.97 तथा टी–अनुपात 11.26 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (798=0.05 (1.96) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **''आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है'' अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।**

$H_{01.2}$ आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्रों और प्रयोग न करने वाले छात्रों के अधिगम शैली में पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 2

आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले छात्रों के अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र			आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्र		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	250	103.25	16.74	150	94.90	13.69
$D=(M_1 \sim M_2)$	8.35					
σ_D	1.54					
t-value	5.42					
	df = 398 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = सार्थक					

व्याख्या–

सारणी सं0 02 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले छात्रों के अधिगम शैली का मध्यमान क्रमशः 103.25 एवं 94.90 तथा मानक विचलन क्रमशः 16.74 एवं 13.69 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 8.35 तथा मानक त्रुटि 1.54 तथा टी–अनुपात 5.42 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (398=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम– शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **''आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले छात्रों के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है'' अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्रों के अधिगम शैली प्रयोग न करने वाले छात्रों की अपेक्षा उच्च है।**

$H_{01.3}$ आईसीटी का प्रयोग करने वाली एवं प्रयोग न करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 03

आईसीटी का प्रयोग करने वाली एवं प्रयोग न करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाली छात्रा			आईसीटी का प्रयोग न करने वाली छात्रा		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	250	101.72	13.33	150	84.24	8.99
$D=(M_1 \sim M_2)$	13.48					
σ_D	1.12					
t-value	12.04					
df = 398 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = सार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 03 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाली एवं प्रयोग न करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली का मध्यमान क्रमशः 101.72 एवं 84.24 तथा मानक विचलन क्रमशः 13.33 एवं 8.99 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 13.48 तथा मानक त्रुटि 1.12 तथा टी–अनुपात 12.04 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (398=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से अधिक है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **"आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है" अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाली छात्राओं के अधिगम शैली प्रयोग न करने वाली छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।**

$H_{01.4}$ आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 04

आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र			आईसीटी का प्रयोग न करने वाली छात्रा		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	250	103.25	16.74	250	101.72	13.33
$D=(M_1 \sim M_2)$	1.53					
σ_D	1.35					
t-value	1.13					
df = 498 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = असार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 04 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली का मध्यमान क्रमशः 103.25 एवं 101.72 तथा मानक विचलन क्रमशः 16.74 एवं 13.33 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 1.53 तथा मानक त्रुटि 1.35 तथा टी–अनुपात 1.13 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (498=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से कम है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना स्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना अस्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **"आईसीटी प्रयोग करने वाले छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर नहीं है" अर्थात् आईसीटी का प्रयोग करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली में समानता है।**

$H_{01.5}$ आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी सं0 05

आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली के प्राप्तांकों के मध्य टी–अनुपात का अन्तर

क्र0सं0	आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्र			आईसीटी का प्रयोग न करने वाली छात्रा		
	N	M	S.D.	N	M	S.D.
	150	94.90	13.69	150	88.24	8.99
$D=(M_1 \sim M_2)$	6.66					
σ_D	1.34					
t-value	4.97					
df = 298 = .05 (1.97) /.01 (2.59) = सार्थक						

व्याख्या–

सारणी सं0 05 में दिये गये मान के आधार पर आईसीटी प्रयोग न करने वाले छात्र–छात्राओं के अधिगम शैली का मध्यमान क्रमशः 94.90 एवं 88.24 तथा मानक विचलन क्रमशः 13.69 एवं 8.99 है। दोनों के मध्यमानों का अन्तर 6.66 तथा मानक त्रुटि 1.34 तथा टी–अनुपात 4.97 प्राप्त हुआ, जो स्वतन्त्रांश (298=0.05 (1.97) एवं .01 (2.59)) पर दिये गये मान से कम है। अतः शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत होती है जबकि शोध–परिकल्पना स्वीकृत हुई है।

परिणाम–

शोधार्थी द्वारा निर्मित परिकल्पना के परीक्षणोपरान्त पाया गया कि **"आईसीटी प्रयोग न करने वाले छात्र एवं छात्राओं के अधिगम शैली में सार्थक अन्तर है" अर्थात् आईसीटी का प्रयोग न करने वाले छात्रों में अधिगम शैली आईसीटी प्रयोग न करने वाली छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।**

निष्कर्ष–

शोधार्थी द्वारा समस्या कथन के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना का सत्यापन करने के पश्चात् निष्कर्ष में पाया गया कि– आईसीटी प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली में अन्तर है अर्थात् आईसीटी का प्रभाव लिंग के आधार पर अधिगम शैली पर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- नेहरू, आर.एस. (2014), शिक्षा में आईसीटी। ए.पी.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली। सक्सेना, जे और सक्सेना, एम.के. (2009)। आईसीटी व्यावसायिक शिक्षा। ए.पी.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली।
- भारत सरकार (1995) जननिशक्त अधिनियम 1995, भारत का राजपत्र, नयी दिल्ली।

- पाण्डेय एस.के. (2016) जनवरी डिजिटल इंडिया से बदलेगी शिक्षा के तस्वीर, नयी दिल्ली।
- भारत सरकार (2016) निशक्त जन अधिकार अधिनियम 2016, भारत का राजपत्र नयी दिल्ली।
- यादव, पी. (2016) 21वीं सदी की शिक्षा में आईसीटी की भूमिका। इंजीनियरिंग और एप्लाइड सांइसेंज में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, 6(3),30–38।
- शर्मा, आर.एस. (2016जनवरी) शिक्षा में प्रौद्योगिकी अधीर पीढ़ी कि आशाएं एवं अकाक्षाएं, नयी दिल्ली।
- संजीव, के. (2009) विशिश्ट शिक्षा, जानकी प्रकाशन पटना।
- सिंगल निधि (2013) विकलांग बच्चों कि शिक्षा, योजना भवन, संसद मार्ग नयी दिल्ली।
- सुब्बा राव टी.ए. (री प्रिंट 2006) मैनुअल आन डेवलोपिंग कम्युनिकेशन स्किल इन पर्सन विथ मेंटल रीटार्डेसनएन आईएम एच सिकन्दराबाद।

Cite this Article:

[1]अभिषेक त्रिपाठी एवं [2]डॉ0 अच्युत कुमार यादव, "आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 01, pp.115-122, September 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अभिषेक त्रिपाठी[1] एवं डॉ0 अच्युत कुमार यादव[2]

For publication of research paper title

"आईसीटी का प्रयोग करने वाले एवं प्रयोग न करने वाले विद्यार्थियों के अधिगम शैली का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-01, Month September 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/